thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 9 रोहतक, 28 जुलाई, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

नव भारतोदय को किरणाञ्जलि देता सूर्योदय

❑ देवनारायण भारद्वाज

भारत और सूरज तुल्यार्थक शब्द हैं। भा (प्रकाश) में रत (संलग्न) जो रहता है, वही तो सूरज है और वही भारत है। सूरज आकाश में रहता है, किन्तु उसका प्रकाश सर्वत्र भूलोक में भी रहता है। भारत भूलोक में रहता है, किन्तु इसके यश का प्रकाश आकाश तक व्याप्त रहता है। भारत के इस भूभाग का सनातन नाम आर्यावर्त है। आर्यावर्त भी भारत का समानार्थक है, क्योंकि इसकी परिभाषा में जो तत्त्व निहित है—वह है **'आर्याज्योतिरग्राः'** (ऋ० 7.33.7) अर्थात् इस भूमि पर उत्पन्न पुरुष या स्त्री आर्य हैं, क्योंकि जिस ओर वे चलते हैं, उनके आगे-आगे ज्योति चलती है। सृष्टि सृजन के बाद लगभग दो अरब वर्ष तक भारत भू की ज्योति जगमगाती रही, किन्तु महाभारत काल के कुछ सहस्र वर्ष पूर्व इस ज्योति पर धुन्ध छाई तो छाती ही चली गई। बीच-बीच में कतिपय वर्चस्वी विद्वान् ब्राह्मण और तेजस्वी राजन्य आये, उन्होंने सूरज पर छाये बादलों को छांट तो दिया, किन्तु उनके हटते ही आततायी शक्तियों के प्रबल षड्यन्त्रों के वशीभूत होकर यह भारतभूमि (भारत माता) परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ती चली गयी। फिर से भारत माता के वीर सपूतों ने बलिदान किये और 15 अगस्त, 1947 को इसकी बेड़ियाँ कटी तो, किन्तु शरीर विकलांग हो गया और पुत्रों ने यथास्थिति से समझौता करना ही उचित समझा। अब तक इस भारत भूमि को आर्यावर्त भारतवर्ष के प्रभा मण्डल से हटकर एक और संज्ञा प्राप्त हो गई थी—वह है इण्डिया।

भौतिक रूप से अंग्रेजी सत्ता से संग्राम तो रुक गया था, किन्तु इण्डिया और भारत का एक नया संघर्ष चल पड़ा था। भारतीय प्रजा के मतों से जीतकर आने वाले राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री इण्डिया के पक्षधर बनकर

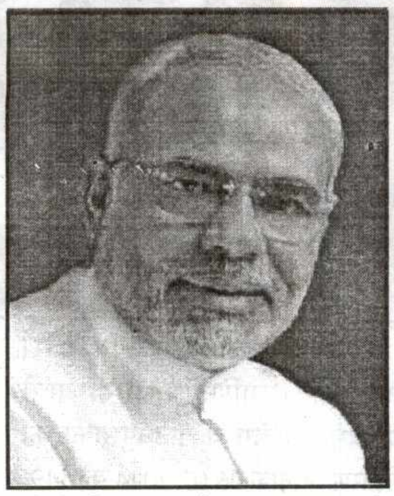

अंग्रेजों के पदचिह्नों पर चलकर ही शासन करने लगे थे। इस अवधि में भारतीय मनीषा के कतिपय राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री आये, किन्तु उनक चारों ओर इण्डिया भक्तों का ही घेरा बना रहा। इसी ऊहापोह में 66 वर्ष यों ही निकल गये। सन् 2014 के लोकसभा के सामान्य निर्वाचन में सम्पूर्ण भारत की जनता ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा गोधरा से गोहाटी तक भूमिपुत्रों को विजयश्री प्रदान कर दी और दयानन्द, पं० श्यामजीकृष्ण वर्मा, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और मोरार जी भाई देसाई की गुजरात भूमि के प्रतिनिधि नरेन्द्र भाई दामोदरदास मोदी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में पदासीन कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने हिन्दू (आर्य) होने और कहलाने पर गर्व है। संसद के केन्द्रीय कक्ष में जब मोदी के सम्मान में आडवाणी जी ने कहा—उन्होंने कृपा करके संगठन को विजय दिलाई है। मोदी का उत्तर सदैव स्मरणीय रहेगा, उन्होंने कहा—मेरे लिए यह कृपा शब्द कभी भी उचित नहीं है। मैं भारत माँ की सन्तान हूँ, कोई सन्तान माँ पर कृपा नहीं कर सकती, वह तो केवल समर्पित होकर सेवा कर सकती है जैसे भारत मेरी माँ है, वैसे ही भाजपा भी मेरी माँ है। मैं उस पर कृपा नहीं-उसकी सेवा कर रहा हूँ, आज ऊँचा हूँ, तो अपने बड़ों के कंधों के सहारे ऊँचा हुआ हूँ, यह उनकी कृपा है।

मोदी ने संसद में प्रवेश करते समय, उसके सदन के द्वार पर मस्तक झुका कर प्रणाम किया। मानो संसद में भारतीयता की आत्मा ने प्रवेश किया हो। नरेन्द्र मोदी इस देश की 125 करोड़ की जनता के हितों की बात करते हुये कहते हैं कि मैं अपने धर्म का आचरण करता हूँ और सभी धर्मों का आदर करता हूँ, किसी भी प्रलोभन के लिए पक्षपात नहीं करूँगा और दूसरे विचारों को मानने वालों के साथ अन्याय नहीं होने दूंगा। यदि यह चुनाव मोदी नहीं जीतते तो इण्डियामुखी परधर्मी जीतते और अगले पांच वर्ष में यह देश भारत की विचारधारा का देश नहीं रह पाता और इण्डिया इस पर छायी रहती। हम पूर्व के सूर्योदय की उपेक्षा कर पश्चिम के अस्ताचल के गर्त में गिर जाते। मोदी जी बड़ी चुनौती यह रहेगी कि वे जनता की अकूत आकांक्षाओं की उड़ान के बल पर उच्चासन पर पहुंचे हैं, इसलिए पारदर्शिता पूर्वक उसकी अभिलाषाओं की पूर्ति का लक्ष्य बनाये रक्खें। इसका भरोसा उनके इन वाक्यों से लगता है—"सबका साथ सबका विश्वास, यह सरकार सवा सौ करोड़ देशवासियों की है।" मोदी ने अपने प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह को न केवल ऐतिहासिक बना दिया, प्रत्युत भारत के चक्रवर्ती गणराज्य की भूमिका का प्रदर्शन कर दिया। उन्होंने दक्षेस के शासक राजनेताओं को न केवल बुलाया ही, प्रत्युत प्रत्येक के अतिथि निवास में जाकर राष्ट्रभाषा में बात की। अल्पकालिक प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जी मालदीप में आयोजित दक्षेस शिखर सम्मेलन में अपना मौलिक हिन्दी भाषण करके सभी उच्च प्रतिनिधियों की न केवल सराहना अर्जित कर चुके थे, प्रत्युत यह मोदी जी के लिए उनका सफल मार्गदर्शन था। अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेशमंत्री के रूप में भी संयुक्त राष्ट्र संघ में यद्यपि हिन्दी भाषण दिया था, किन्तु यह मूल अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद मात्र था।

विदेशी शासनाध्यक्ष अपने देश या भारत में अपनी राष्ट्रभाषा में बात करते हैं, हमारे देश के शासनाध्यक्ष उसे तात्कालिक अंग्रेजी अनुवाद से समझते हैं। यह कार्य कोई दुभाषिया ही करता है। विदेशी राजनेताओं के मध्य हिन्दी में संवाद करते समय दुभाषिया द्वारा यह अनुवाद सम्बन्धित भाषाओं में भी कराया जा सकता है। पड़ोसी धर्म निभाते हुए जो मोदी ने पहल की, वह विशेष श्लाघनीय है। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को, उनकी माँ के लिए एक सुन्दर शॉल भेंट की, तो उन्होंने अपने देश जाकर मोदी की माँ के लिए एक श्वेत साड़ी का उपहार भेजा। पड़ोसियों से स्नेह सम्बन्धों का इससे बड़ा संकेत क्या होगा? कि अल्पकाल में ही समय निकालकर मोदी ने भूटान और विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने बांग्लादेश की यात्रायें कीं। जो अमेरिका गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए, उन्हें अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं दे रहा था, वहां के ही सांसद

शेष पृष्ठ 7 पर...

भूः-भुवः-स्वः क्या है?

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

गायत्री मन्त्र में पहले तीन व्याहृतियाँ हैं—भूः, भुवः, स्वः। इन तीन का अर्थ है अस्ति, भाति, प्रीति। संसार की गति, इसका प्रवाह, इसके विकास की दिशा भूः से भुवः की तरफ, भुवः से स्वः की तरफ जा रही है। जो वस्तु 'है', जो 'भूः' है, जिसकी सत्ता है, वह तभी तक है या तभी तक वह अस्ति की कोटि में है, जब तक वह हो 'हो रही' है, जहाँ उसमें 'होनापन' या 'भुवः' की प्रक्रिया समाप्त हुई, वहीं वह स्वयं समाप्त हो जाती है। 'भूः' तब तक 'भूः' है, अर्थात् तब तक अस्ति है, तब तक 'है' है, तब तक 'भूः' का विकास 'भुवः' की तरफ 'है' का 'होने' की तरफ हो जाता है। इसी तरह यह 'होना' भी खास दिशा की तरफ जा रहा है, वह दिशा 'स्वः' है, उसी को सुख कहते हैं। परन्तु इस अस्ति, भाति-प्रीति की प्रक्रिया को चला कौन रहा है? यह स्वयं तो नहीं चल रहा। इस प्रवाह को जो बहा रहा है, जिसने ऐसा विधान रचा है जिसके कारण प्रत्येक सद्वस्तु तभी तक टिकी हुई है जब तक अपने आपको होने की प्रक्रिया में बनाए रखती है और होने की प्रक्रिया भी एक निश्चित दिशा की तरफ ही मुँह उठाये चली जा रही है। सुख की, आनन्द की तलाश में यह सारा प्रवाह बह रहा है। इस सारे प्रवाह को बहाने वाला कौन है?

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

गायत्री मन्त्र में प्रवाह के उस बहाने वाले को 'सविता' कहा गया है। 'सविता' शब्द 'षूञ् प्रसवे' धातु से बना है। 'सविता' अर्थात् प्रसव करने वाला पैदा करने वाला। उस पैदा करने वाले ने, सविता ने हर एक वस्तु की रचना करते हुए हर एक वस्तु में भूः-भुवः-स्वः का पुट दे दिया, हर वस्तु में अस्ति, भाति, प्रीति 'है', 'होना', 'सुख के लिए होना' का बीज डाल दिया है।

सविता की उस शक्ति का क्या नाम है जिससे हर वस्तु उस निश्चित प्रक्रिया में गुजर रही है जिसका अभी वर्णन किया गया। गायत्री मन्त्र में सविता की शक्ति का नाम 'भर्ग' कहा गया है। 'भर्ग' क्यों कहा गया है? 'भर्ग' शब्द 'भ्रस्ज पाके' धातु से बना है। 'भर्ग' का अर्थ है—पकाने की शक्ति। जैसे कुम्हार घड़े को पकाता है, घड़ा ज्यों-ज्यों पकता जाता है, त्यों-त्यों अपने निर्दिष्ट कार्य के लिये तैयार होता जाता है, इसी प्रकार सविता संसार की हर वस्तु को पका रहा है और पकते-पकते हर वस्तु अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ती जा रही है। 'सविता' का 'भर्ग' ही है जिससे हर वस्तु धीरे-धीरे पकती हुई भूः-भुवः-स्वः की प्रक्रियाओं में से गुजर रही है। इसलिये गायत्री मन्त्र का अर्थ हुआ—हम सविता देव के उस भर्ग का ध्यान करते हैं, जो संसार की हर वस्तु को एक खास दिशा में धीरे-धीरे पकाता हुआ ले जा रहा है। किस दिशा में? भूः-भुवः-स्वः की दिशा में, अस्ति-भाति-प्रीति की दिशा में। सवितुः देवस्य भर्गो धीमहि—इसका यह अर्थ हुआ। बाकी रहा 'धियो यो नः प्रचोदयात्'—इसका अर्थ तो स्पष्ट ही है। सविता का जो 'भर्ग' संसार की हर वस्तु को एक निश्चित 'स्वः' की दिशा में प्रवाहित कर रहा है।

वही 'भर्ग' हमारी बुद्धि को भी ऐसी प्रेरणा दे कि हम भी अपने को विकास की इसी प्रक्रिया में से ले चलें, हम अपने को संसार का प्रसव करने वाली सविता-शक्ति के साथ, उस प्रक्रिया के साथ जो हर वस्तु को धीरे-धीरे पकाती हुई निश्चित उद्देश्य तक पहुँचा रही है, ऐसे समन्वय में ले आयें ताकि हमारे जीवन के विकास की दिशा भी वही बन जाय, हम भी विश्व के अंग बन जायें, हम भी अपने आपको धीरे-धीरे वैसे ही पकाने लगें जैसे हर वस्तु का सहज-पाक हो रहा है, जैसे वह गायत्री की व्याहृतियों में प्रतिपादित एक खास क्रिया में से गुजर रही है। गायत्री मन्त्र में 'सविता' और 'भर्ग' शब्द एक खास महत्त्व रखते हैं। 'सविता' का अर्थ जहाँ 'षूञ् प्रसवे' धातु से 'उत्पन्न करने वाला' यह होता है वहाँ इसका अर्थ 'सूर्य' भी है—वह सूर्य जो हर वस्तु को पकाता है। ''सविता' के सूर्य अर्थ को सामने रखकर ही 'भर्ग' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ 'भ्रस्ज पाके' धातु से पकाना है। सूर्य हर वस्तु को पका रहा है, सविता भी वह शक्ति है जिसने संसार को पैदा किया-हर वस्तु को पका रहा है, यह पकना, यह क्रमिक विकास ही 'भूः-भुवः-स्वः' है। 'भूः-भुवः-स्वः' ये तीन अक्षर विश्व-नियन्ता प्रभु द्वारा निर्धारित विकास की एक निश्चित प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। ब्रह्माण्ड की अर्थात् भूमि, अन्तरिक्ष और द्यौः की यही प्रकिया हमारे पिण्ड में चले-ब्रह्माण्ड में सूर्य (सविता) इस प्रक्रिया का प्रतिनिधि है, पिण्ड में बुद्धि (धीः) इस प्रकार की प्रतिनिधि है-यही गायत्री मन्त्र का अर्थ है। तभी कहा कि ब्रह्माण्ड का 'सविता' जो विश्व को 'भूः-भुवः-स्वः' में से धीरे-धीरे गुजार रहा है, 'अस्ति-भाति-प्रीति' की प्रक्रिया में डालकर अपने 'भर्ग' अर्थात् पकाने की शक्ति से पका रहा है, वही हमारे पिण्ड में हमारी 'धीः' अर्थात् बुद्धि को ऐसी प्रेरणा दे, जिससे हमारे पिण्ड में 'धीः' वही काम करे जो ब्रह्माण्ड में 'सविता' करता है। 'सविता' जैसे विश्व को, बुद्धि वैसे मनुष्य को अस्ति-भाति-प्रीति की 'भूः-भुवः-स्वः' की प्रक्रिया में से गुजार दे—यही गायत्री मन्त्र का अर्थ है। (उपनिषद्)

गायत्री मन्त्र—ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

(यजुर्वेद अ० 36/मं० 3)

विमोचन एवं पुस्तकों का वितरण

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित 'पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् एवं बैग व पाठ्यपुस्तकों का वितरण' दिनांक 06.07.2014 को 119, गुरुकुल गौतम नगर में उत्साह एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् पुस्तक का विमोचन, कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, मुख्य अतिथि डॉ० सुधीर कुमार आर्य (जे०एन०यू०), विशिष्ट अतिथि पंडित जगदीश मातादीन एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों के साथ अन्य आमन्त्रित विद्वान् डॉ० अजयकुमार (जे०एन०यू०), डॉ० विवेकानन्द शास्त्री (रोहतक), श्री रामचन्द्र अहलावत (योगशिक्षक, दिल्ली), आदि के करकमलों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् गुरुकुल गौतमनगर, गुरुकुल मंझावली, गुरुकुल पौंधा (देहरादून), नव-उद्घाटित गुरुकुल केरल के 40 ब्रह्मचारियों को साठ हजार रुपये मूल्य के बैग एवं पाठ्यपुस्तकें वितरित की गईं।

इस अवसर पर पाणिनीय अष्टाध्यायी प्रवचनम् के भाष्यकार स्व० आचार्य सुदर्शनदेव जी के सुपुत्र डॉ० सुधीरकुमार आर्य ने (जे०एन०यू०) ने अपने उद्बोधन में सभी ब्रह्मचारियों को अधिक से अधिक संस्कृत व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त कर जीवन में सफल होने का उपदेश दिया। हॉलैण्ड से पधारे पण्डित जगदीश दातादीन ने कार्यक्रम की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए रामपाल शास्त्री व मानव सेवा प्रतिष्ठान के सभी अधिकारियों की प्रशंसा की। डॉ० कँवरसिंह (वैदिक प्रवक्ता, वैंकटेश्वर कॉलेज), डॉ० अजय कुमार योग शिक्षक, (जे०एन०यू०), श्रीं चन्द्रदेव शास्त्री (संस्कृत-शिक्षक, सोनीपत), श्री रामपाल शास्त्री (मानव सेवा प्रतिष्ठान), श्री के०एम० राजन (गुरुकुल केरल), श्री विजय कुमार आर्य (मानव उत्थान संकल्प संस्थान), श्री रामचन्द्र अहलावत (योगशिक्षक, दिल्ली) आदि ने अपने उद्बोधन एवं उपस्थिति से कार्यक्रम की शाभा को बढ़ाया। अध्यक्षीय भाषण में स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यों की सराहना करते हुए स्व० आचार्य श्री सुदर्शनदेव जी के साथ अपने संस्मरण सुनाये तथा सभी छात्रों को पाठ्यपुस्तकें प्रदान करते हुए उन्हें जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा दी।

—सोमदेव शास्त्री, प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली-29

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

पारमेश्वरी शक्ति

-: वेद-मन्त्र :-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्॥
(ऋ० 10॥125।3॥)

अर्थ—(अहम् राष्ट्री) मैं जगद् रूप राष्ट्र की स्वामिनी हूँ (वसूनाम् संगमनी) समस्त धनों को प्राप्त कराने वाली (यज्ञियानाम्) श्रेष्ठ कर्मों की (प्रथमा चिकितुषी) प्रमुख रूप में चेताने वाली हूँ (भूरिस्थात्राम्) जड़-चेतन सभी बहुत प्रकारों से विद्यमान (भूरि आवेशयन्तीम्) अनेक रूपों में प्रविष्ट हुई (ताम् माम्) उस मुझको (देवाः) विद्वान् (पुरुत्रा व्यदधुः) बहुत रूपों में वर्णन करते हैं।

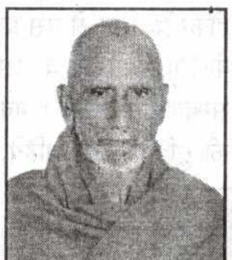

इस सूक्त को वागाम्भृणीय सूक्त कहते हैं। अम्भृण का अर्थ महान् और वाक् शक्ति का नाम है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है और उसकी शक्ति का नाम वागाम्भृणी है। अर्थ को समझने के लिये उत्तम पुरुष के स्थान पर प्रथम पुरुष का प्रयोग करना ठीक रहेगा।

1. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्**—परमेश्वर ने ही वसुओं का निर्माण कर उनको धारण किया है। पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र ये आठ वसु हैं। सभी प्राणी बसते हैं अथवा ये वास के हेतु हैं इसलिये इन्हें वसु कहते हैं। पारमेश्वरी शक्ति ही सर्वत्र विराजमान हो रही है। वही इन वस्तुओं की रचना और उनको गति प्रदान कर आकाश में अपनी-अपनी कक्षाओं में भ्रमण करा रही है। **स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्** (यजुः० 13.4) वही सूर्यादि और अन्य लोकों को धारण कर रही है। सभी लोक परस्पर एक-दूसरे की आकर्षण शक्ति के कारण अपनी कक्षाओं में घूम रहे हैं। पृथ्वी अपनी कीली पर चौबीस घण्टे में एक बार चक्र पूरा कर लेती है। इससे दिन-रात बनते हैं। इसी भांति वर्ष में एक बार सूर्य के चारों ओर घूम जाती है जिसके कारण ऋतुओं का निर्माण होता है। चन्द्रमा पृथिवी से चार लाख, बत्तीस हजार मील दूर है और एक मास से कुछ न्यून समय में पृथिवी का चक्र पूरा करता है। इसी भांति अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं और उनके चन्द्रमा उनके चारों ओर गति कर रहे हैं। यह एक ब्रह्माण्ड कहलाता है। हमारी आकाश गंगा में लाखों पृथिवी जैसे ग्रह हैं जिनमें जीवन की सम्भावना है। ऐसी लाखों आकाश गंगायें खगोलविदों ने दूरबीन की सहायता से खोज ली हैं। इन सबका अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण धारण और आकर्षण वही पारमेश्वरी शक्ति कर रही है।

2. **चिकितुषी प्रथम यज्ञियानाम्**—यज्ञिय पदार्थों में मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। मेरा एक नाम यज्ञ भी है। **तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः** (यजुः० 31.6) मैंने ही प्रकृति के परमाणुओं से अपनी ईक्षण क्रिया द्वारा सृष्टि की रचना की है। यज्ञ रूप होने से मैं सबको यज्ञियकर्मों का ज्ञान भी कराती हूँ। वेद मेरी ही वाणी है जिसका उपदेश मैंने चार ऋषियों को सृष्टि के आदि में दिया। जिसके अनुसार लोग आचरण कर भोग-अपवर्ग की प्राप्ति कर सकें। सृष्टि में सर्वत्र यज्ञ हो रहा है। नरियाँ पर्वतों से निकलकर प्यासी धरती की प्यास बुझा रही हैं। समुद्र से बादल उठकर पर्वतों पर बरसते हुये नदियों को जल प्रदान कर रहे हैं। नदियाँ सागर में जाकर मिल रही हैं। मनुष्यों और दूसरे प्राणियों द्वारा छोड़ी गई कार्बन-डाई-ऑक्साइड को वृक्ष अपना भोजन बना ऑक्सीजन छोड़ रहे हैं। वही ऑक्सीजन प्राणियों को जीवन प्रदान कर रही है। जिधर भी देखें, सर्वत्र सृष्टि में यज्ञ चल रहा है। और इसे देख आप लोग भी यज्ञिय कार्यों को करते हुये जड़-चेतन सबकी सुरक्षा करो यही मेरा सन्देश है। हे मनुष्यो! जब तुम किसी पापकर्म असत्य, हिंसा, चोरी, व्यभिचार आदि में प्रवृत्त होते हो तब मैं ही तुम्हारे हृदय में विराजमान होती हुई भय, शंका, लज्जा, ग्लानि के भाव प्रकट कर तुम्हें पाप पंक में फंसने से सावधान करती हूं। मेरा दण्डविधान भी इसीलिये है कि लोग पापकर्मों से डर शुभकर्म करते हुये मोक्ष की प्राप्ति करें। मेरी चेतावनी से भी जब लोग जब पापकर्मों से नहीं हटते तब मैं अपना रौद्ररूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अतिशीत, अतिग्रीष्म और महामारी के रूप में दिखलाती हूँ जिनसे आहत होकर सभी जन त्राहिमाम् कर उठते हैं। इतना होने पर भी मैं करुणामयी देवी हूँ। यदि लोग दण्डभय से सन्मार्ग पर चलने लगते हैं तो वे फिर मेरी कृपा के अधिकारी बन जाते हैं।

3. **ताम् भूरिस्थात्राम् भूरि आवेशयन्तीम्**—पारमेश्वरी शक्ति ही सृष्टि के कण-कण में विराजमान हो उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय कर रही है। उसी के भय से सूर्य तप रहा है। पृथिवी आदि लोक अपनी कक्षाओं में घूम रहे हैं। जिधर भी देखें उधर वही शक्ति सर्वत्र व्याप्त हो रही है। विद्युत् का गर्जन, मेघों का वर्षा करना, समुद्र में ज्वार-भाटा, वृक्षों में फल-फूल, नदियां, नाले, वन, पर्वत और नाना प्रकार के जीव जन्तु सभी उसी रचनाकार की कृतियाँ हैं जिन्हें देख अनायास ही उस महान् रचनाकार का स्मरण हो जाता है। किसी को श्रेष्ठ मनुष्य का जन्म, किसी को पशु-पक्षी और किसी को कीट-पतंग का शरीर भी तो उसी ने दिया है। पत्ते-पत्ते की कतरन में उसकी अद्भुत कारीगरी दिखलाई देती है।

4. **माम् देवा व्यदधुः पुरुत्रा**—मेरी रचना की विविधता को देख विद्वान् लोग मुझे अनेक नामों से पुकारते हैं। **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** (ऋ० 1.164.46) सृष्टि की उत्पत्ति करने से ब्रह्मा धारण करने से विष्णु और प्रलय करने से रुद्र मेरे ही नाम हैं। मेरे अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव होने से नाम भी अनन्त हैं। परन्तु मेरा मुख्य निज नाम ओ३म् है जिसका जप और अर्थ चिन्तन करने वाले का निश्चय से कल्याण होता है। सर्वशक्तिमान् होने के कारण मुझे अपने कार्य सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय के लिये किसी दूसरे सहायक की आवश्यकता ही नहीं होती। इसी भांति जीवों के कर्मफल की व्यवस्था भी मेरे ही अधीन है।

हे मनुष्यो! मेरे गुण, कर्म, स्वभाव को जान तुम शुभकर्मों का आचरण करते हुये दुःखों से छूट मोक्ष पद को प्राप्त करो और सावधान होकर सुनो—**अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥** ऋ० 10.125.4

इतने प्रमाणों के उपस्थित होने पर भी जो मेरी सत्ता को नहीं मानते हैं, उनका विनाश ही होता है। मैं तुम्हें सत्य वचन कहती हूँ। तुम सावधान होकर मेरी बात को सुनो।

(ऋग्वेद-स्वाध्याय से साभार)

—आचार्य बलदेव

ईश्वर कभी पराजित नहीं होता

❑ आचार्य अभय आर्य, रोहतक

रामपालदास की लड़ाई मूल रूप से ईश्वर से है। ईश्वरीय ज्ञान जो सत्यस्वरूप है उसी के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज की स्थापना हुई है। वेदप्रचार ही आर्यसमाज का ध्येय है। अनेक वर्षों से रामपाल दास आर्यसमाज के विरुद्ध विषवमन कर रहा है। आर्षग्रन्थों के आधार पर ही ईश्वरीय ज्ञान वेद का यथार्थ अनुवाद करने वाले महोपकारक, महाविद्वान् महर्षि दयानन्द पर यह अनर्गल, भद्दी टिप्पणी करता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में अपने वेदादि शास्त्रों के ज्ञान के आधार पर सौ नाम लिखे हैं तथा कहा है कि ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने विन्दुवत् हैं, क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण-कर्म-स्वभाव व्याख्यात किये हैं। इसके विपरीत परमात्मा के विषय में रामपाल दास की खोज यह है कि यह दास '**कविः**' को '**कबीर**' पढ़ता है। यही इसका वेदज्ञान है।

आचार्य अभय आर्य

ऋषि दयानन्द कहते हैं कि ईश्वर जैसा न कोई था, न कोई है और न कोई होगा। यह एक पुस्तक '**हरी आये हरियाणा नूं**' का प्रचार करवा रहा है। इसमें इसके पहले के प्रचार की तरह इसे परमात्मा घोषित किया गया है। यह ईश्वर की सत्ता को खुली चुनौती है। यह भी इसकी अजीब कल्पना है कि परमात्मा हरयाणा में आया है, इसका अर्थ तो यह हुआ कि पहले हरयाणा में परमात्मा था ही नहीं तथा अब हरियाणा में आने के बाद वह हरयाणा से इतर स्थानों पर नहीं है। इस प्रकार रामपालदास सीधा ईश्वर से लड़ रहा है। लेकिन यह ईश्वर के इस उपदेश को नहीं जानता—

'**अहमिन्द्रो न परा जिग्य**' अर्थात् मैं परमैश्वर्य्यवान् कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता।

ईश्वर की न्याय-व्यवस्था के अनुसार इसकी व इसके अनुयायियों की बुद्धि विनाश के मार्ग पर चल रही है। अभी वर्तमान में रोहतक व हिसार, हरयाणा में कोर्ट में पेशी के दौरान इसके अनुयायियों ने जमकर हंगामा किया। इन्होंने 'जजों' के खिलाफ भी दोषारोपण करके पुस्तकें बांटी व वकीलों से धक्का-मुक्की की। इनके दुर्व्यवहार के कारण हरयाणा के सभी वकीलों ने वर्क सस्पेंड किया व इसकी जमानत रद्द करवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट जाने का निर्णय किया।

thearyasamaj.org

माता-पिता की सम्मान के साथ सेवन करना सन्तान का कर्त्तव्य

❑ मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य की जीवन यात्रा का आरम्भ जन्म से होता है और समाप्ति मृत्यु पर होती है। जन्म के समय वह प्रायः पूर्ण रूप से अज्ञानी होता है। मात्र उसके पास स्वाभाविक ज्ञान होता है और पूर्व जन्म का प्रारब्ध वा संस्कार। पूर्व जन्म के संस्कारों से उसकी प्रवृति बनती हैं जिसे माता-पिता व आचार्य मिलकर अभीष्ट उद्देश्य या लक्ष्य की ओर प्रवृत कर उसे सिद्ध करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। प्रवृति को बदला जा सकता है यदि हमें अपने से अधिक ज्ञान, संस्कार व आचारवान्, अनुभवी व ज्ञानी लोग मिल जायें और वह हमें समय-समय पर या निरन्तर दिशानिर्देश करते रहें। हमारे स्वयं के अन्दर भी जानने व सत्य को ग्रहण करने का स्वभाव, प्रवृति व रूचि होनी चाहिये। यदि ऐसा नहीं होगा तो फिर हमारे जीवन की भावी दिशा जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सफल नहीं होगी। संसार में हमें जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना है और उसकी प्राप्ति के लिए योग्य आचार्य या निर्देशक-गाइड को नियुक्त कर उससे निर्देश व दिशा प्राप्त कर उस पर चिन्तन कर सावधानी पूर्वक चलना है और समय-समय पर उस पर पूरा ध्यान व विचार करते हुए उसमें जहां भी परिवर्तन व संशोधन अपेक्षित हों, करना होता है। हमारे जो माता-पिता व आचार्य हैं, वह कौन हैं? यह वो लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन में आचार्यों, अनुभवी व ज्ञानियों तथा बड़े-बड़े ज्ञानी बुजुर्गों की संगति व निकटता प्राप्त की होती है व अनेक विषयों के ग्रन्थों को पढ़ा होता है। उन्हें जीवन के बारे में जो जानकारियां होती हैं, वह कम आयु के लोगों में नहीं होती। उनका सान्निध्य हमारे लिए वरदान होता है। जब यदा-कदा हम उनके सम्पर्क में आते हैं तो हमारा कार्य उनसे संवाद कर उनकी सेवा करना होना चाहिये। सेवा में उनकी आवश्यकता की वस्तुयें यथा भोजन, वस्त्र, मार्ग व्यय या यात्रा आदि कुछ धन व द्रव्य आदि देने होते हैं। इससे प्रसन्न होकर वह सेवा करने वालों को आर्शीवाद के साथ अपने ज्ञान व अनुभव से लाभ प्रदान करते हैं। इसे संगतिकरण कहा जाता है। प्राचीन काल में हमारे यहां इस संगतिकरण को यज्ञ कहा जाता था इसका कारण था कि यज्ञ में बड़े ज्ञानी व अनुभवियों को आमंत्रित कर उनका सत्कार किया जाता था। वह अपना आशीर्वाद प्रवचन व उद्बोधन के रूप में देते थे जिससे यजमान व सभी यज्ञ में सम्मिलित लोगों को लाभ होता था। यहां हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए कि एक जगह अग्निहोत्र यज्ञ हो रहा है जिसमें एक चिकित्सक - डाक्टर या वैद्य, एक भवन निर्माता इंजीनियर, एक आध्यत्मिक विद्वान तथा एक आचार्य - अध्यापक उपस्थित हैं। सबको बीस-बीस मिनट का समय प्रवचन या उद्बोधन के लिए दिया जाता है।

मनमोहन कुमार आर्य

पहले चिकित्सक महाशय प्रवचन करते हैं। वह बताते हैं कि स्वास्थ्य का आधार भोजन, निद्रा व संयमपूर्ण जीवन होता है। इन तीनों का जीवन में संतुलन होना चाहिये। इसके विपरीत भूख से अधिक भोजन, अल्प व अधिक निद्रा तथा संयम अर्थात् इन्द्रियों को वश में रखकर उसे अनावश्यक विषयों में प्रवृत होने से रोक कर जीवन व्यतीत करना होता है। वह बताते हैं कि भोजन सदैव शाकाहारी ही होना चाहिये। यदि सामिश भोजन करेंगें तो उससे रोगों के लग जाने और समय से पूर्व मृत्यु आ जाने अथवा अधिकांश समय रोगों की चिकित्सा में व्यतीत होगा। सामिष भोजन तामसिक व राजसिक होता है। जैसा खाये अन्न वैसा बनेगा मन, अर्थात् भोजन के तामसिक व राजसिक होने से मन में तामसिक व राजसिक गुणों का प्रभाव अधिक होगा व सत्व गुण का प्रभाव कम होगा। रोगी व्यक्ति की कार्य करने की क्षमता भी कम होती है जिससे अर्थोपार्जन व सुख भोगने में भी बाधा होती है। सभी लोगों को स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिये। फिर वह कहते हैं कि यदि किसी को स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई कष्ट है तो वह बताये जिसका निवारण वह करेंगें। इस प्रकार से संगतिकरण से वहां उपस्थित लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों की प्राप्ति से लाभ होता है। हमने यहां मात्र संकेत किया है। उनके व्याख्यान में स्वास्थ्य सम्बन्धी विस्तृत बातें हो सकती हैं। वर्तमान समय में मधुमेह, कैंसर, रक्तचाप व हृदय रोग, पाचन तन्त्र से सम्बन्धित रोग, शारीरिक क्षमताओं को बढ़ाने आदि के बारे में भी वह लोगों को विस्तार से बता सकते हैं। इसी प्रकार से स्वास्थ्य से सम्बन्धित अनेकानेक बातें वह बता सकते हैं या उनसे पूछी जा सकती हैं। इसके बाद भवन निर्माण से सम्बन्धित इंजीनियर महोदय अपने विचार व्यक्त करते हैं। वह बताते हैं कि भवन ऐसा हो जो छोटा भले ही हो परन्तु उसमें वायु के आने-जाने के लिए समुचित दरवाजे, खिड़कियां व रोशन दान होने चाहियें। भवन ऐसे स्थान पर हों जहां प्रदूषण न हो अन्यथा वहां रहने वाले लोग रोगों का शिकार हो सकते हैं। यदि वहां प्रदुषण हो तो वहां के लोगों को चाहिये कि वह संगठित होकर प्रशासन से उस प्रदूषण के निवारण के लिए अनुरोध व उसकी पूर्ति के हर सम्भव प्रयास करें। भवन में शुद्ध जल की सुविधा होनी चाहिये। भोजन के लिए व प्यास लगने पर पीने के जल के लिए घर में जलशोधक यन्त्र प्योरिफायर लगा हो, तो अच्छा रहता है। मनुष्यों को अधिकांश रोग वायु व जल के प्रदुषण से ही प्रायः हुआ करते हैं। आजकल भोजन के लिए जिन वनस्पतियों व अन्न, साग-सब्जी का हम प्रयोग करते हैं उसमें रसायनिक व कृत्रिम खाद का प्रयोग किया जाता है। ऐसा अन्न व भोज्य पदार्थ स्वास्थ्य के अत्यन्त हानिकारक होते हैं, इनसे बचना चाहिये। भवन मे सूर्य के प्रकाश के प्रवेश का भी अधिक से अधिक प्रावधान व प्रबन्ध होना चाहिये। सूर्य का प्रकाश रोग कृमिनाशक होता है। भवन के मध्य में यदि एक यज्ञशाला बनी हो जिसमें प्रातः व सायं यज्ञ-अग्निहोत्र होता है, तो यह परिवारजनों के आध्यत्मिक, भौतिक तथा स्वास्थ्य-लाभ के लिए अतीव महत्वपूर्ण होता है। इससे घर का दुर्गन्धयुक्त प्रदुषित वायु हल्की होकर घर से बाहर निकल जाती है और बाहर के वातावरण की शुद्ध वायु का घर में प्रवेश होता है। यज्ञ की अग्नि में डाले गये घृत आदि पदार्थ सूक्ष्म होकर वायुमण्डल व आकाश में फैल जाते हैं। यज्ञ से निर्मित शुद्ध वायु व वायु में विद्यमान स्वास्थ्यवर्धक एवं रोगनिवारक गैसें प्राण व श्वांसों के द्वारा हमारे शरीर के भीतर प्रवेश करती हैं जिससे स्वास्थ्य को अधिक लाभ होने के साथ मन, आत्मा तथा बुद्धि को भी ईश्वर की ओर से प्रसन्नता व सुख का लाभ प्राप्त होता हैं। भवन में फर्श कैसे हों जिससे फिसलकर होने वाली दुर्घटनाओं से बचा ज़ा सके, इसकी भी चर्चा होती है व उपाय बतायें जाते हैं। सस्तें निवास कैसे बन सकते हैं आदि, आधुनिक परिप्रेक्ष्य की अनेक प्रकार की जानकारियां हम भवन इंजीनियर से प्राप्त कर सकते हैं।

अब आध्यात्मिक विद्वान अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए बताते हैं कि हम आंखों से अपने जिस ब्रह्माण्ड को देखते हैं, वह अनन्त परिमाण वाला है। इस ब्रह्माण्ड में अनन्त संख्या में सूर्य, चन्द्र, पृथिवियां व लोक-लोकान्तर हैं। सूर्य का प्रकाश एक सेकण्ड में 1,86,000 किलोमीटर की दूरी तय करता है। ब्रह्माण्ड में ऐसे कुछ सूर्य हैं जिनका प्रकाश हमारी पृथिवी पर अभी तक नहीं पहुंचा है। उन सूर्यों का प्रकाश इस ब्रह्माण्ड को बने 1,96,08,53,114 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हमारे सौर्य मण्डल तक अभी नहीं आया है जिसका अर्थ है कि वह सूर्य हमसे 1,96,08, 53,114 ग 1,86,000 ग 60 ग 60 ग 24 ग 365 किमी. से भी अधिक दूरी पर है। इससे आप इस सृष्टि की विशालता को जान सकते हैं। जब यह ब्रह्माण्ड इतना विशाल है तो इसको बनाने वाला ईश्वर कितना विशाल होगा। उसी सत्ता व शक्ति ने हमारे शरीर को भी बनाया है और उसी के द्वारा हमारे प्रारब्ध, कर्मों, आचरणों आदि के अनुसार हमें सुख व दुख प्राप्त हो रहा है। अतः प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उस सृष्टिकर्ता ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जाने। वह ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य व पवित्र है। उस ईश्वर का अवतार होना सम्भव नहीं है। उसकी उपासना ध्यान व चिन्तन से ही हो सकती है। मूर्तिपूजा व अन्य किसी प्रकार से जैसा कि मत-मतान्तरों की पूजा-अर्चनायें आदि हैं, उसका प्राप्त होना असम्भव है। उसको जानने व प्राप्त करने के लिए सत्कर्मो व पवित्र कर्मों, अंहिसा व सत्य आचरण, ईश्वर-उपासना, योगाभ्यास, अग्निहोत्र यज्ञ, दान, सेवा, पुण्य कर्म आदि का करना आवश्यक है। हमारा स्वरूप क्या व कैसा है? वह महात्मा व आध्यात्मिक गुरू बताते हैं कि जीवात्मा सत्य, चेतन, अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, कर्म करने मे स्वतन्त्र व फल भोगने में परतन्त्र है। हम सबका जीवात्मा अजन्मा, अनादि, अमर, एक देशी, कर्म-फल के बन्धनों में बन्धा हुआ है। अनादि काल से हम सबका जीवात्मा संसार की मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि सभी जीव-योनियों में अनेकों-अनेकों बार जन्म धारण कर चुका है और अनेकों बार मोक्ष में आता-जाता रहा है। ईश्वरोपासना, योगाभ्यास आदि कर्तव्यों को करके व उनके सफल होने पर ईश्वर का साक्षात्कार कर यह जीवात्मा मनुष्य योनि में मोक्ष का अधिकारी बनता है। इसी प्रकार से प्रकृति के स्वरूप का वर्णन

शेष पृष्ठ 6 पर....

thearyasamaj.org

हार्दिक संवेदना

❑ जगमालसिंह, प्रवक्ता-संस्कृत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, महम (रोहतक)

आर्यसमाज मकड़ौली कलां, जिला रोहतक के संस्थापक महाशय बलवन्त सिंह आर्य के देहावसान का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। महाशय जी एक व्यक्ति न होकर एक चलती-फिरती संस्था थे। इसलिए उनके चले जाने से जहाँ समाज की अपूरणीय क्षति हुई है, वहाँ मैं अपनी व्यक्तिगत भी बहुत बड़ी हानि महसूस कर रहा हूँ।

मेरा जन्म भी सौभाग्य से इसी गाँव में हुआ है, इसलिए बचपन से ही उनके यदा-कदा दर्शन हो जाया करते थे। उनकी छवि एक दबंग, प्रभावशाली और चरित्रवान् व्यक्ति की थी। मेरा उनसे प्रत्यक्ष सम्पर्क 25 दिसम्बर 1985 को हुआ। अवसर था सुमेधा (महाशय जी की सुपुत्री) की शादी का। महाशय जी प्रत्येक शादी में वेदप्रचार करवाते थे अतः इस अवसर पर भी वेदप्रचार हो रहा था। आचार्य प्रद्युम्न (गुरुकुल खानपुर, जिला महेन्द्रगढ़) प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् व स्वामी रुद्रवेश (रायपुर रोड़ान, करनाल) प्रसिद्ध भजनोपदेशक आए हुए थे। आचार्य प्रद्युम्न का शरीर सौष्ठव अत्यधिक आकर्षक था। वेद की गम्भीरता और प्रभावशाली वक्तृता उसमें चार चांद लगा रही थी। संक्षेप में मैंने जैसे राम व कृष्ण आदि महापुरुषों के चित्र व चरित्र देखे व सुने थे, वे सब उनमें प्रतिबिम्बित होते हुए परिलक्षित हो रहे थे अतः मैंने भारतीय सभ्यता व संस्कृति का परिष्कृत रूप आर्यसमाज के रूप में मानकर इसको अङ्गीकार कर लिया।

इसके बाद महाशय जी को अनेक वर्षों तक अत्यन्त निकटता से देखने, समझने व जानने का मौका मिला। ज्ञात हुआ कि इनकी माताजी का देहान्त मात्र पाँच मास की मासूम अवस्था में ही हो गया था और लगभग दस-बारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते इनके पिता व दादी आदि सबका साया इनके सिर से उठ चुका था। ऐसी स्थिति में जीवन में कुटेबों का आना किसी प्रकार का आश्चर्य उत्पन्न नहीं करता, सो इनके जीवन में समाज में व्याप्त हुक्का, बीड़ी, शराब, सुल्फा आदि व्यसनों ने अपना स्थान बना लिया। महाशय जी में एक विशेष गुण यह था कि वे जिस बात को अपना लेते थे, उसकी पूर्ति भी वे प्राणपण से करते थे। अबोधावस्था के कारण हुक्के, बीड़ी आदि का सेवन समाज के बड़े लोग करते हैं तो ये ग्राह्य होगी। यह सोचकर इनको अपना लिया। इतना ही नहीं अपितु धर्म या पुण्य का कार्य समझकर अन्य लोगों के लिए भी अपनी बैठक में हुक्के-पानी की व्यवस्था प्रचुरता से की। यह सिलसिला पन्द्रह-सोलह वर्ष की उम्र से लेकर लगभग 30-32 वर्ष की आयु तक चला। इसके उपरान्त इनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन का सूत्रपात हुआ।

जगमाल सिंह आर्य

महाशय जी के स्वयं के कथनानुसार—''मैं रोहतक में कोई जीनस (फसल) बेचने गया हुआ था। वापिस आते हुए मैंने देखा कि धन्वन्तरि स्कूल में कुछ लोग इकट्ठे हुए हैं। मैं भी स्कूल में चला गया। वहाँ आचार्य भगवान्देव (गुरुकुल झज्जर) भाषण दे रहे थे।' उन्होंने कहा—**'हम गुरुकुल में बच्चों को पढ़ाते हैं। सुबह-शाम हवन-सन्ध्या के साथ प्राणायाम भी करवाते हैं। परीक्षण करने पर हमने यह पाया कि जिस बच्चों के पिता, दादा आदि धूम्रपान करते हैं, वे बच्चे प्राणायाम में सफल नहीं हो पाते।'** यह शब्द सुनते ही मेरे शरीर में करंट-सा लगा। मेरी जेब में बीड़ी थी, मैंने तत्काल वहीं तोड़कर फैंक दी और घर आकर बैठक में रखे तीन हुक्के भी फाली से फोड़ दिए और भविष्य के लिए यह दृढ़निश्चय कर लिया कि यदि कोई व्यक्ति मेरे सामने आकर यह कहे कि या तो बीड़ी या हुक्के का एक कश ले अन्यथा तेरे को तोप से उड़ायेंगे तो मैं कहूँगा कि मुझे तोप से उड़ा दो, परन्तु मैं हुक्के या बीड़ी का कश नहीं ले सकता।''

1953 में आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित बस्तीराम से यज्ञोपवीत ग्रहण कर विधिवत् आप निष्ठावान आर्य बन गए। आचार्य भगवान्देव के सान्निध्य में रहकर आपने सभी कुटेबों को छोड़कर अत्यन्त तपस्वी जीवन व्यतीत किया। यहाँ तक कि लगभग साठ वर्षों तक आपने नमक, मिर्च, मसाले व मीठे आदि का पूर्ण परित्याग रखा। ब्रह्मचर्य की कठोरता से पालन किया। आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में दल-बल सहित बढ़-चढ़कर भाग लिया। अपने तथा अपनी बहन समाकौर के सभी बच्चों को आर्षपाठविधि से गुरुकुलों में पढ़ाया। आपका विचार तो यह था कि आपके सभी बच्चे विद्वान् बनकर ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर देश व धर्म का कार्य करें। आचार्य विजयपाल (गुरुकुल झज्जर) व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा आपको बहुत शकुन देती थी।

बचपन की प्रतिकूलताओं के कारण आप औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहे। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने के उपरान्त यह न्यूनता आपको अत्यधिक खलने लगी इसलिए लगभग 35 वर्ष की आयु में आपने पण्डित अमरसिंह से देवनागरी अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर—

करत-करत अभ्यास के,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते,
सिल पर परत निशान॥

को अपना आदर्श बनाकर अभ्यास द्वारा आपने अति कुशलता प्राप्त कर ली। ऋषि ग्रन्थों के दुरुह स्थलों को स्वयं समझकर अन्यों को हृदयङ्गम करवाने में आप सिद्धहस्त हो चुके थे। किसी भी व्यक्ति के सुधार के लिए आप अत्यधिक समय देते थे। पिछले 28 वर्षों से मैंने आपके कभी समयाभाव का बहाना बनाते नहीं देखा। परस्पर के वाद-विवाद में आप कभी पराजित नहीं होते थे। अपनी बात की पुष्टि में आप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के उद्धरण सुनाया करते थे, जो आपने अक्षरशः कण्ठस्थ किए हुए थे, जिनको सुनकर अशिक्षितों की बात ही क्या? बड़े-बड़े शिक्षित भी दांतों तले उंगली दबाकर खिसकने के लिए मजबूर हो जाया करते थे।

गाँव के स्तर पर आपने समाज-सुधार के अनेक कार्य किए जिनमें स्वांग बन्द करवाना, टूणा तोड़ना, गाँव की बणी में बनी मण्ढियों को गिराना, अपना कुआं बनवाकर मनुष्यमात्र के लिए पानी के समान अवसर उपलब्ध करवाना, अछूतों के घर पर हवन कर उनको यज्ञोपवीत धारण करवाना, कृषकवर्ग द्वारा मजदूरवर्ग के खेतों में प्रवेश पर रोक लगाने पर उसको तोड़ना आदि विविध कार्य करते हुए आपने समाज के सामने बहुत सारे कार्य स्वयं करके दिखाकर आदर्श स्थापित किये। जैसे—लड़के-लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करवाना। बगैर किसी दिखावे व बिना दान-दहेज के शादी करना। पर्दा-प्रथा को समाप्त करना। प्राणिमात्र के कल्याण के लिए अन्तिम श्वास तक अपरिहार्य रूप से यज्ञ करना। ब्रह्मचर्यपालन द्वारा शुचिता की स्थापना करना आदि। बुद्धिमान् लोग सागर की एक बूंद पानी से सम्पूर्ण सागर का अनुमान कर लेते हैं, इसलिए 'तण्डुलोदन न्यायवत्' न्याय से ही मैं कह सकता हूँ कि महाशय जी एक अच्छे आदमी थे और अच्छे आदमी का चले जाना परिवार के साथ-साथ समाज व राष्ट्र के लिए भी क्षतिकर होता है। इसलिए उनके चले जाने से परिवार को जो दुःख हुआ है, उसमें शामिल होते हुए अपनी हार्दिक संवेदनाएं प्रेषित कर रहा हूँ और अपेक्षा कर रहा हूँ कि महाशय जी के चले जाने से समाज में जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसको आप सभी मिलकर पूरी करने की कोशिश करेंगे। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि अपनी न्याय-व्यवस्था से उस पवित्रतम आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे और परिवारजनों इस विकट दुःख की घड़ी से धैर्य धारण कराये।

सूचना

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज के आशीर्वचन से तथा **पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** (रोजड़ वाले) की अध्यक्षता में गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) में दिनांक 13 अगस्त बुधवार से 17 अगस्त 2014 रविवार तक **पाँच दिवसीय आवासीय सरल आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक-09812792770 व वैदिक सरल आध्यात्मिक शिविर समिति रोहतक-09466008120 तथा आर्यावर्त टांसपोर्ट कंपनी रोहतक-09215676662 के द्वारा किया जा रहा है। पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण/शिविर शुल्क 800/- रु० प्रति शिविरार्थी है। लाभार्थी संपर्क करें। अन्य सम्पर्क सूत्र—

09355674547, 09416139382, 09728884949, 09466566064, 09896326718, 09255537679

रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

thearyasamaj.org

टंकारा गोशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गोशाला में दानस्वरूप प्राप्त गौ से जहाँ एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गोशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गोभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद से ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/- रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा और पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गोशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम केवल खाते में आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) शिवराजवती आर्या (उपप्रधाना) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

गौ-दान : महादान

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गोशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों के पर्याप्त नहीं हो रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चित किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गोशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डालकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम केवल खाते में आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) शिवराजवती आर्या (उपप्रधाना) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

अपील

समस्त ऋषिभक्तों से विनम्र प्रार्थना है कि टंकारा में रोटी बनाने की मशीन जो कि विशेषकर ब्रह्मचारियों को अधिक सुविधाजनक गर्म रोटी प्राप्त हो सके, को ध्यान रखते हुए लगाई गई है। लगभग पूरे भारत से अपने-अपने घरों से और विशेषकर माँ के वात्सल्य से दूर घर की सुख-सुविधाओं जैसे वातावरण हमारे ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में भी प्राप्त हो। इस कारण से इस मशीन का महत्त्व ज्यादा है।

हम समस्त उन दानी माताओं को विनम्र प्रार्थना करना चाहते हैं कि इस मध्य में, ब्रह्मचारियों पर ममतामय आशीर्वाद देते हुए सहयोग राशि अवश्य भेजें। जो एक बार में पूर्ण 2,50,000/- रुपया देंगे उनका नाम मशीन पर अंकित करवाया जाएगा। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम केवल खाते में आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) शिवराजवती आर्या (उपप्रधाना) रामनाथ सहगल (मन्त्री)

(Advt.)

योग-ध्यान-साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्बू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 14 से 21 सितम्बर 2014 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जायेंगे तथा दर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद-पारायण यज्ञ भी होता है। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नंबर 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। —भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

एक मन घी का यज्ञ सम्पन्न

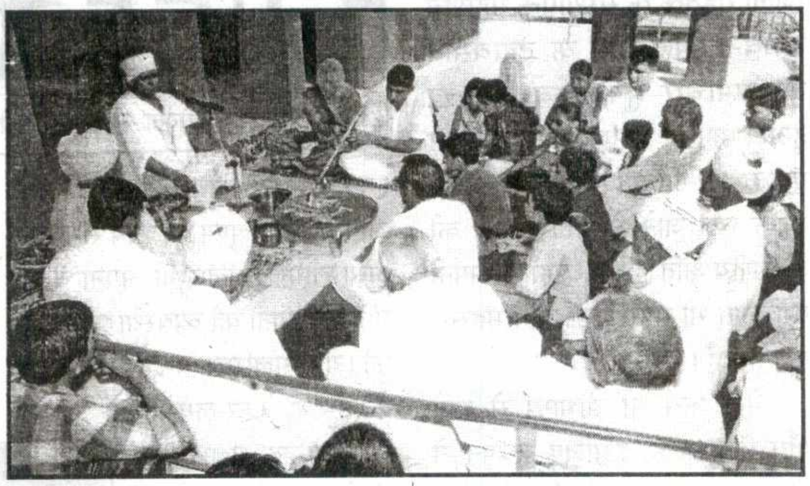

दिनांक 4 से 6 जुलाई 2014 को सलारपुर माजरा (सोनीपत) में एक मन घृत का यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी थे। यज्ञ में गांव के युवाओं के अतिरिक्त स्त्री-पुरुष भी सम्मिलित हुए। आचार्य जी ने यज्ञ के अनेक लाभों का वर्णन करते हुए कहा कि आज वैज्ञानिक यज्ञ के नये-नये अनुसंधान कर रहे हैं। अभी चीन देश में FIRE पैथी का प्रचलन हो रहा है। वेद में यज्ञ का अत्यधिक वर्णन पाया जाता है। यज्ञ के लाभों के कारण ही वैदिकों का कोई भी कार्य यज्ञ के बिना सम्पन्न नहीं होता। श्री धर्मपाल जी, श्री वेदपाल जी व श्री सतपाल जी श्रद्धा से यज्ञ करवाते हैं। गाँव के अनेक गणमान्य व्यक्ति भी रुचि लेते हैं।

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

सृष्टि और आध्यात्मिक विज्ञान का.... पृष्ठ 4 का शेष....

करते हुए वह बताते हैं कि प्रकृति प्रलायावस्था में कारण रूप में, सत्व, रज व तम गुणों की साम्यावस्था होती है। सत्व, रज व तम प्रकृति के तीन गुणों व सूक्ष्म कणों की असृष्ट अवस्था है। सृष्टि के आरम्भ में सत्व, रज व तम गुण प्रधान इस प्रकृति में ईश्वर की प्रेरणा व सामर्थ्य से विकृति होना आरम्भ होकर सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व लोक लोकान्तर आदि बनते हैं। हमारे व सभी प्राणियों के शरीर इस प्रकृति से ही बने हैं। यह प्रकृति स्वरूप व स्वभाव से जड़ है। जड़ का अर्थ अचेतन व निर्जीव होना है। अचेतन होने के कारण इसे सुख-दुख की अनुभूति नहीं होती। सुख व दुख की अनुभूति चेतन तत्व वा जीवात्मा को ही होती है जिसमें उसके पाप-पुण्य कर्म कारण होते हैं। मनुष्य जन्म का उद्देश्य सत्कर्मों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्त करना है, ऐसा धर्म गुरू व महात्मा जी बताते हैं। इसके बाद आचार्य व अध्यापक अपना प्रवचन करते हुए शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। वह कहते हैं कि अशिक्षित व्यक्ति पशु के समान होता है। सभी मनुष्यों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये, संस्कृत-आर्ष व्याकरण व वेदादि साहित्य को पढ़ने के साथ हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त करके पश्चात गणित, विज्ञान, समाज शास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, प्रबन्धन, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा व इलेक्ट्रोनिक्स आदि अन्य सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान व विद्याओं का अध्ययन करना चाहिये। वेद-विद्या को प्राप्त कर तदनुरूप ज्ञानपूर्वक पुण्य कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। आयु के 50वें वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहते हुए व अपने ज्ञान व विद्या से धनोपार्जन करते हुए वैदिक जीवन पद्धति के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिये। इस प्रकार की बातें हमें यज्ञ आदि व अन्य आयोजनों के अवसर पर विद्वानों से सुनने को मिलती हैं। यह सब बातें बताने वाले वृद्ध व बुजुर्ग सज्जन होते हैं जिन्होंने अपने जीवन में व्यापक अध्ययन कर अनुभव प्राप्त किया हुआ होता है जिससे हमारा जीवन सफल बनने से कृतकार्य होता है। क्रमश:

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

ऋषि-स्वप्नों को साकार रूप गुरुकुल कालवा

आपको विदित है कि आर्यजगत् में गुरुकुल कालवा ऐसा गुरुकुल है जिसमें गोघृत से पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ होता है। अतिथियों का सेवा-सत्कार श्रद्धाभाव से होता है। वानप्रस्थी, संन्यासी भी गुरुकुल में निवास करते हैं और आपको यह जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल कालवा के पुरुषार्थी गोभक्त व्याकरणाचार्य स्वाध्यायशील विद्यार्थियों के अतिप्रिय आचार्य राजेन्द्र जी जो कि गुरुकुल कालवा को लगभग पन्द्रह वर्षों से अपना योगदान दे रहे हैं और गुरुकुल को अपना जीवन समर्पित करके सुचारु रूप से नियमित चला रहे हैं, ऐसे तपस्वी और यज्ञप्रेमी के सान्निध्य में रहकर अनेक सुयोग्य विद्वानों का निर्माण हो रहा है तथा वर्तमान समय में गुरुकुल की व्यवस्था को भी सुचारु रूप से चला रहे हैं, जो कि वे महान् तपोनिष्ठ गोभक्त आचार्य बलदेव जी महाराज की आज्ञानुसार कार्यरत हैं और ब्रह्मचारियों के लिए आवश्यकता अनुसार अत्युत्तम व्यवस्था करते हैं। इस गुरुकुल में संन्यासी व ब्रह्मचारियों के लिये दुग्ध, भोजन और वस्त्रादियों की भी निःशुल्क व्यवस्था की जाती हैं, यहाँ केवल व्याकरण और वेदानुकूल ग्रन्थों का पठन-पाठन कराया जाता है तथा यहाँ नियम और दिनचर्या पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि गुरुकुल में ऋषियों की परम्परा चलती रहे। **—वर्णी भीमार्यः**

नव भारतोदय को किरणाञ्जलि.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

अपनी उच्च प्रतिनिधि सभाओं में मोदी के संबोधन हेतु आतुर हो उठे हैं। रेलभाड़ा तथा अन्य वस्तुओं की मूल्यवृद्धि जनता के लिए चिन्ताजनक होती है, इससे यथासंभव बचने की चेष्टा होनी चाहिए। मन्त्रिमण्डल ने सर्वप्रथम प्रस्ताव पारित करके विदेश में जमा काले धन को भारत लाने का निर्णय तो कर दिया है, किन्तु इसके लिए विश्राम नहीं, निरन्तर होने वाली प्रक्रिया का प्रदर्शन भी होना चाहिए। परतन्त्रता काल में विदेशियों द्वारा लूट और स्वतन्त्रता काल में 66 वर्षों तक भ्रष्टाचार की छूट से भारत माता के शरीर में चुभे हुए कांटों को निकालने में पीड़ा तो होती है, किन्तु इन घावों पर निष्पक्षता, नैतिकता एवं स्नेह सौहार्द का मलहम लगने से कुछ राहत भी मिलती है। लेखक का सुझाव है कि प्रत्येक माह की एक निश्चित तिथि व समय पर प्रधानमंत्री मोदी का सहानुभूतिपूर्ण दस मिनट का नियमित सम्बोधन दूरदर्शन पर होना चाहिए।

हमारे वे वयस्वी-वयधनी वरिष्ठ व अति वरिष्ठ नागरिक देश में चरित्र-हनन की पीड़ाओं को सहते व देखते हुए इस संसार से विदा हो गये, उनके लिए अमर बलिदानी सरदार करतार सिंह का न्यायालय में दिया गया बयान आश्वास्तकारी है। वे बोले—मैंने सभी जुर्मों को स्वीकार कर लिया है और यह भी जानता हूँ कि इनके दो ही दण्ड मिल सकते हैं—एक कालापानी दूसरा मृत्युदण्ड। मैं मृत्युदण्ड को ही पसन्द करूँगा, क्योंकि इससे शीघ्र ही मुझे दूसरा जन्म मिल जायेगा और मैं अपनी मातृभूमि की सेवा अगले जन्म में भी कर सकूँगा। ऐसी दिवंगत आत्माओं को बाल या किशोर अवस्था से ही—वेदमाता भी अपना मनोहर उपहारपूर्ण वरदान देते हुए बोल पड़ेगी—"**भारतीले सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे। ता नश्चोदयत श्रिये॥**" (ऋ० 1.188.8) अर्थात् भारत सूर्य का नाम है, उसकी सम्बन्धिनी 'भारती' प्रभालोक की देवी है, 'इळा' भूदेवी है और सरस्वती अन्तरिक्ष की देवी है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे देशवासियों के मस्तिष्क सूर्य-प्रकाश से चमकें, शरीर दृढ़ता व शक्ति से दमकें और हृदय वायु की भाँति अविरल क्रियाशीलता के संकल्प से उमगें। देशवासी मातृभूमि, मातृ-संस्कृति एवं मातृ-भाषा की गरिमा को बढ़ाकर '**विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा**' ध्वज गान को ध्येय गान-अवदान बनाकर चरितार्थ करते रहें।

जय भारत वन्दे मातरम्।

संपर्क—'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्- 'समस्त विश्व को आर्य बनायें'

अटेली मण्डी खण्ड के गाँव मिर्जापुर-बाछौद में दिनांक 28, 29 जून 2014 को आर्य महासम्मेलन बडी धूम-धाम से मनाया गया। इस महा आयोजन में समाज में फैली कुरीतियाँ, पाखण्ड, अराजकता, भ्रूणहत्या, गोहत्या, नारी उत्पीड़न, दहेजप्रथा, नशाखोरी आदि सामाजिक बुराइयों पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा सम्मेलन मे उपस्थित समस्त जनसमूह से भी इन बुराइयों को समाप्त करने के लिए संकल्प दिलाया।

महात्मा विश्वमुनि संरक्षक आश्रम बाछौद ने भी तमाम विद्वानों एवं आगन्तुकों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के कार्यक्रम व उद्देश्यों की विस्तार से जानकारी दी। महात्मा विश्वमुनि जी ने तमाम विषयों पर पांडित्यपूर्ण प्रकाश डाला। इस मौके पर महात्मा ईशमुनि, सत्यपाल गुरुकुल फरुखनगर, महात्मा हंसमुनि ने वैदिक विधान से यज्ञ कराया। प्रो. रामौतार एवं कृष्ण जेलदार सपत्नीक यजमान बने व विद्वानों को दक्षिणा दी।

भारत प्रसिद्ध विदुषी बहन संगीता आर्या सहारनपुर (यूपी), महाशय लखन सिंह (मथुरा) महाशय वैद्य नन्दराम, धीरज कुमार बलावा, महाशय हरिसिंह गादोज, महाशय भजनलाल, सत्यवीर आर्य, नन्दराम गुरावला एवं स्थानीय भजनोपदेशकों ने आगंतुकों पर अपनी वाणी द्वारा अमिट छाप छोड़ी तथा अपार जनसमूह की प्रशंसा के पात्र बने।

सम्मेलन में पहुंची भाजपा नेत्री बहन संतोष यादव ने महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलने का आह्वान किया व 5100/- की सहायता राशि देकर आयोजकों का उत्साह बढ़ाया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुनीता वर्मा उप जिला प्रमुख ने अपने व्याख्यान में महर्षि दयानन्द को जनक्रांति का प्रथम पुरोधा बताया। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने ही सभ्य व श्रेष्ठ जनों को आर्य कहा था तथा वो स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने भारतवर्ष में राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक व धार्मिक आंदोलनों को जन्म दिया।

सुनीता वर्मा ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने ही ऐसी विचारधारा को जन्म दिया जो अन्य सम्प्रदायों, पंथों व धर्मों की तरह माँ के गर्भ में ही संतान के धर्म का निर्धारण नहीं करती अपितु माँ से उत्पन्न संतान को संस्कारों में दीक्षित करके ही उसे श्रेष्ठ अर्थात् आर्य बनाती है।

इस मौके पर उप जिला प्रमुख ने आर्यसमाज मन्दिर बाछौद के फर्श व मुख्य रास्ते को लाकिंग टाइलों से पक्का करने के लिए 1 लाख की राशि देने की घोषणा की।

श्री बनवारी लाल पूर्व D.E.O. ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया व आर्य समाज के कार्य कारिणी के पदाधिकायों ने धन्यवाद दिया अतिथियों को ऋषिचित्र, माला व शाल भेंट कर आर्यसमाज की ओर से सम्मानित किया गया।

प्रधान श्री रोशनलाल, प्रधान छोटेलाल वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ व कार्यकारिणी सदस्यों ने जलसे की शोभा बढाई, कप्तान श्री जगराम आर्य ने अपने ओजस्वी व्याख्यान देकर आर्य बनने का आह्वान किया। मा. रामौतार, मा. हीरालाल, मा. फूलचन्द, मा. अटाली ने भी अपने भजन प्रस्तुत किये।

श्री मा. राजेन्द्र कोथल एवं मा. धर्मेन्द्र ने कुशल मंच संचालक करने की मिसाल कायम की व संस्था की मदद की व संस्था ने उनका आभार प्रकट किया।

बहन कमला देवी एवं श्री बंशीलाल व समस्त परिवार ने अतिथियों की लंगर सेवा करके पुण्य प्राप्त किया।

समस्त कार्यकारिणी आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद ने तन-मन-धन से सेवा करके अतिथि सत्कार का श्रेय प्राप्त किया। बिजेन्द्र शर्मा समाजसेवी भी उपस्थित रहे।

—महात्मा विश्वमुनि संरक्षक आर्यसमाज एवं जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़। (हरि0) गांव बाछौद, जि. महेन्द्रगढ़।

thearyasamaj.org

उत्तम शिक्षा के लिए हमारे सब अंग स्वस्थ हों

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

मानव तब तक ही उत्तम शिक्षा पा सकता है जब तक वह स्वस्थ है। स्वास्थ्य-विहीन व्यक्ति चाहे जितना भी यत्न कर ले उसका ध्यान एकाग्र होकर शिक्षा-प्राप्ति में लग ही नहीं सकता। बार-बार वह अपने कष्ट को ही याद करता है। इसलिए ऋग्वेद के 10.103.13 मन्त्र तथा सामवेद के मन्त्र 1862 में यह बात खुलकर स्पष्ट की गई है। मन्त्र स्पष्ट कह रहा है कि—

अशोक आर्य

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु। उग्रा वः सन्तु बाह्वोऽनाधरिषया यथासथ॥

मन्त्र आह्वान कर रहा है कि हे मनुष्यों निरन्तर आगे और आगे बढ़ते चले जाओ। इतनी गति से आगे बढ़ो कि तुम्हारे जितने भी शत्रु हैं, वह संभल न पावें, इससे पूर्व ही तुम उन्हें पराजित कर दो। उन शत्रुओं पर विजयी हो जाओ। इन्द्र जो कि परम ऐश्वर्य से सम्पन्न है, वह इन्द्र तुम्हारा कल्याण करे। यह सब कब होगा? जब तुम्हारी बाहें बलशाली होंगी, जब तुम्हारे पास असीम शक्ति होगी। जब तुम शक्तिशाली होंगे तो किसी में इतना साहस न होगा कि वह अकारण तुम्हें दबाने के लिए आगे आवे, सामने आवे। इसलिए तुम्हारे बाजू ही नहीं, शरीर के सब अंग सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न हों।

हम यहाँ पर शिक्षा की समस्याओं पर विचार कर रहे हैं। मन्त्र कहता है कि उत्तम स्वास्थ्य ही उत्तम शिक्षा का आधार है। स्वास्थ्य में गिरावट ही हमारे शिक्षा के क्षेत्र में बाधक होते हैं। इसलिए मन्त्र कह रहा है कि हम सावधानी से निरन्तर आगे बढ़ते हुए अपने अन्दर के रोग रूपी शत्रुओं पर भयानक आक्रमण कर अपने स्वास्थ्य के शत्रुओं को सम्भालने से पहले ही पराजित कर दे। इस सबका भाव यह है कि हम निरन्तर स्वस्थ रहते हुए शिक्षा के उच्च लक्ष्यों को पाने की कशामता अपने अन्दर पैदा करें। यदि हमारे शरीर का एक भी अंग स्वस्थ नहीं है तो हमारी शिक्षा प्राप्ति में वह बाधक होगा। इसलिए हम अपने बाजुओं में असीमित शक्ति प्राप्त करें, शरीर के सब अंगों को सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न बनावें और एक ही धक्के से इन शक्तियों के शत्रुओं का नाश कर उत्तम व उच्च शिक्षा प्राप्त करें।

मन्त्र में बाहुबल का वर्णन किया गया है। यह बाहुबल शब्द इस मन्त्र के माध्यम से हमारे शरीर के सब अंगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है अर्थात् इस एक शब्द से हम अपने शरीर के सब अंगों के सुदृढ़ होने की याचना कराते हैं। जब हमारे यह सब अंग सुदृढ़ होंगे तो हम किसी से भी दबेंगे नहीं, किसी के अन्याय या अत्याचारों के सामने झुकेंगे नहीं। दृढ़ता से हम अपने शत्रुओं का न केवल सामना ही करेंगे बल्कि उन पर विजय पाने में सफल होंगे तथा निरन्तर इन शत्रुओं पर विजयी होते हुए, पूर्ण स्वस्थ रहते हुए बिना किसी बाधा के उत्तम व उच्च शिक्षा पाने में सफल होते हैं।

ऋग्वेद का 10.128.3 भी इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए उपदेश करता है कि **अरिष्टाः स्यामा तन्वा सुविराः।** मन्त्र कहता है कि हमारा शरीर खूब बलवान हो, शक्तिशाली हो, हम वीर हों, शक्ति से सम्पन्न हों ताकि कोई हमारी हिंसा न कर सके। हम सदा विजयी हों। उत्तम शिक्षा पाने के लिए शरीर का स्वस्थ व बलवान होना आवश्यक है। बलिष्ठ शरीर से ही उच्च शिक्षा शीघ्र प्राप्त की जा सकती है।

उत्तम शिक्षा पाने के लिए हमारे शरीर की मजबूती का, दृढ़ता का कितना सम्बन्ध है, इस बात पर प्रकाश डालते हुए अथर्ववेद 4.17.8 में स्पष्ट संकेत किया गया है कि '**त्वमगदश्वर**' उत्तम शिक्षा पाने के लिए ब्रह्मचारी! तू ऐसा कर्म कर कि तू सदा स्वस्थ रहे। अच्छे स्वास्थ्य में ही अच्छी शिक्षा छुपी है। अच्छी शिक्षा पाने के लिए पूर्ण स्वस्थ होना आवश्यक होता है इसलिए तू सदा स्वस्थ रहते हुए विद्या का प्राप्त कर। इसलिए हे मानव तू सदा रोग रहित हुए बलवान सदा विद्या में विचरण कर। अथर्ववेद का मन्त्र संख्या 1.2.2 में भी इस तथ्य पर ही प्रकाश डालते हुए इस प्रकार उपदेश किया गया है—'**अश्मानं तन्वं कृधि**'। अर्थात् हे शिक्षार्थी मानव! यदि तू उच्च व उत्तम शिक्षा प्राप्ति के लिए अभिलाषा रखता है तो तेरे लिए यह आवश्यक है कि तू अपने शरीर को पत्थर के समान बलवान बना। कोई कष्ट या क्लेश तेरे मार्ग में बाधक न बन सके। इस प्रकार एकाग्र हो तू अपनी शिक्षा प्राप्ति में लगा रह।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 7206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

महाशय धर्मपाल ने किया विवरणिका का विमोचन

कोटा, 21 जुलाई। आर्यसमाज द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आयोजित किए जा रहे आठवें 'आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन की सफलता के लिए मेरा आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं। आर्यसमाज के संगठन को मजबूती देने के लिए यह एक दूरदर्शिता पूर्ण कदम है। इस प्रकार के आयोजनों से आर्य परिवारों में मेलजोल बढ़ेगा, रिश्ते मजबूत होंगे तथा युवापीढ़ी का आर्यसमाज के प्रति लगाव बढ़ेगा। इससे आर्य विचारधारा का प्रचार-प्रसार होगा। उक्त विचार महाशय धर्मपाल आर्य, चेयरमैन एम.डी.एच. मसाले ने आर्यसमाज कीर्तिनगर दिल्ली में आयोजित आठवें आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन की विवरणिका पुस्तक के विमोचन समारोह के अवसर पर आयोजित सादे समारोह में निजी आवास पर व्यक्त किये।'

इस अवसर पर विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्यसमाज कोटा द्वारा किये जा रहे सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक, जनकल्याणकारी कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

इस पर महाशय धर्मपाल आर्य ने कहा कि आप इस प्रकार का कार्यक्रम बनाइये मैं स्वयं चार्टर प्लेन से कोटा आकर कार्यक्रम में सम्मिलित होऊंगा।

विवरणिका पुस्तिका के विमोचन समारोह में इस अवसर पर आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने महाशय धर्मपाल जी का राजस्थानी साफा पहनाकर स्वस्तिवाचन के मंत्रोच्चार पूर्वक अभिनन्दन किया। इस अवसर पर विनय आर्य महामंत्री दिल्ली प्रतिनिधि सभा, प्रेम अरोड़ा सामाजिक कार्यकर्ता, रमाकान्त यादव समाजसेवी, रामप्रसाद याज्ञिक कोटा, ओमप्रकाश आर्य प्रधान, सतीश चड्ढा मंत्री आर्य समाज कीर्तिनगर आदि उपस्थित थे।

—अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव, 09799498477

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।